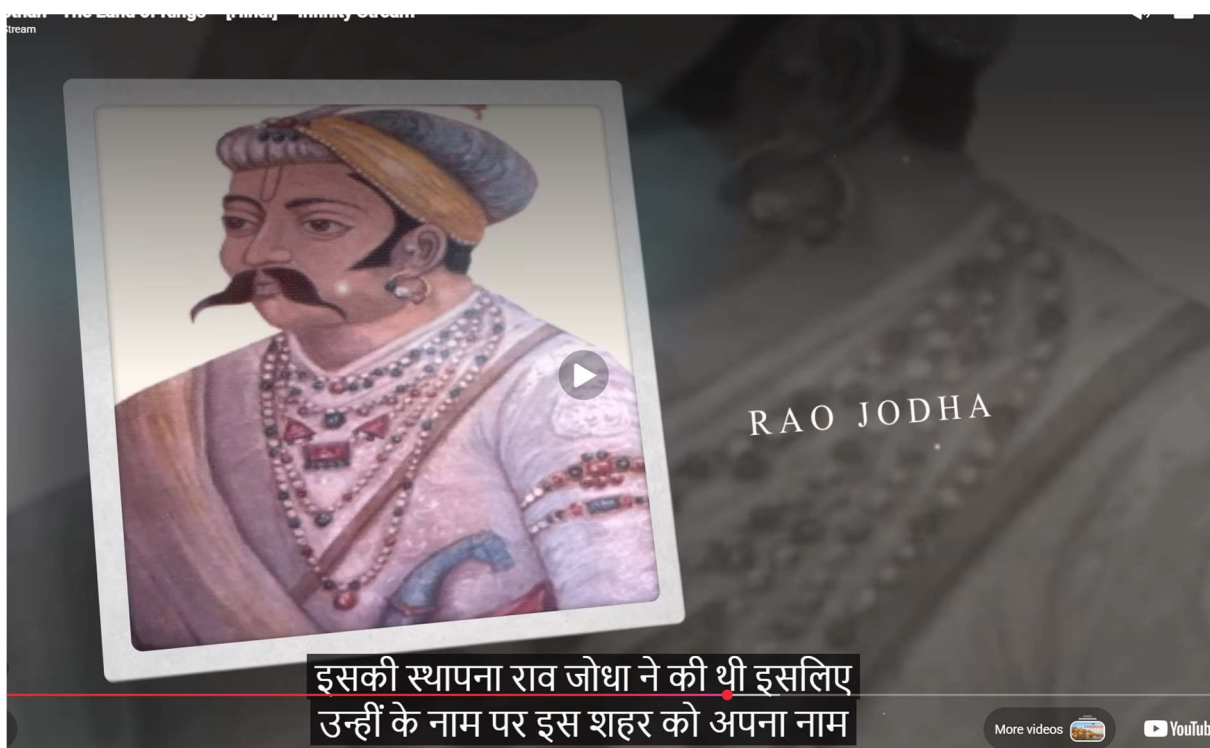








हाँ, पुराने समय में जब दुश्मनों के आक्रमण का खतरा होता था, तो **किले (forts)** केवल राजा के रहने के लिए नहीं होते थे। कई बड़े किलों में युद्ध के समय आसपास के **नागरिक भी शरण लेते थे।**

दुश्मनों से बचाव के लिए किलों में कई विशेष व्यवस्थाएँ होती थीं:

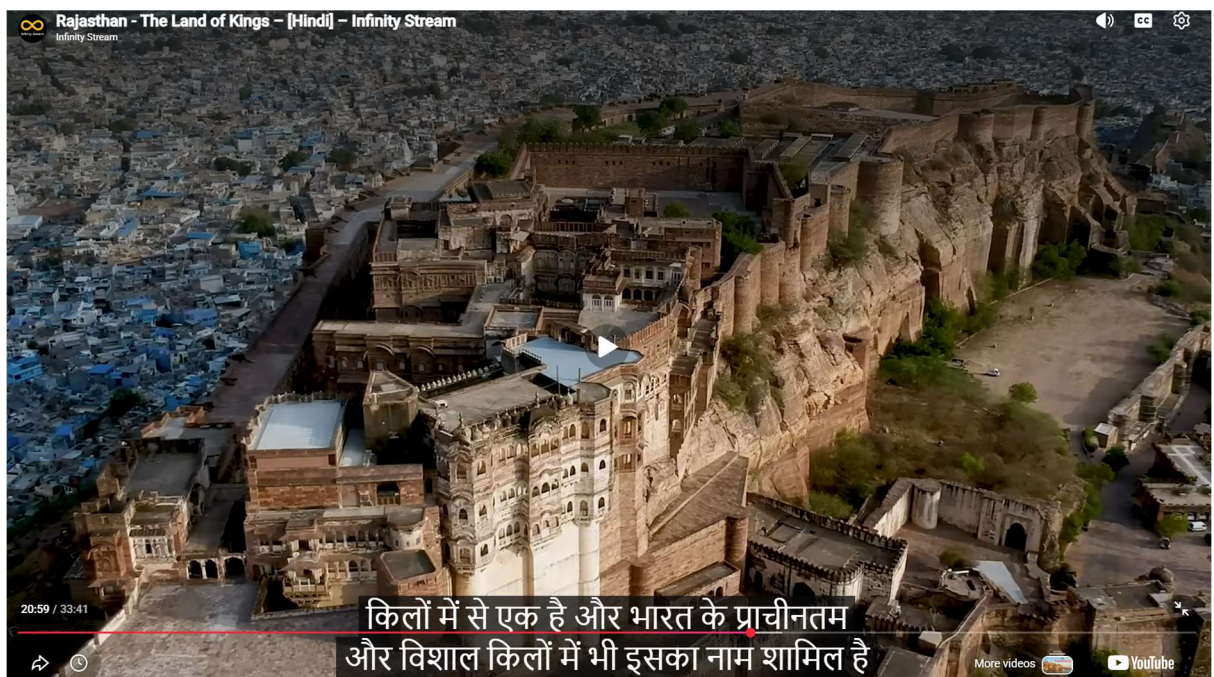
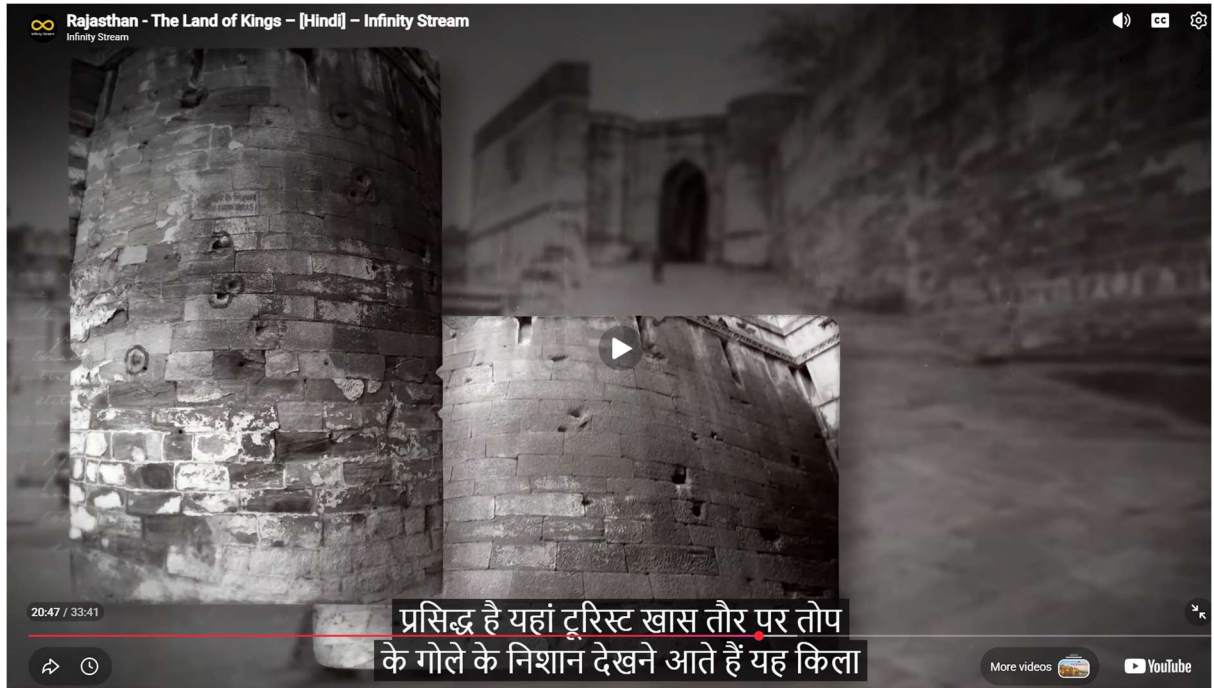
- 🧱 **ऊँची और मोटी दीवारें** – दुश्मन आसानी से अंदर नहीं आ सकता था।
- 🏰 **मजबूत दरवाज़े** – लोहे की कीलों वाले बड़े फाटक।
- 🏔️ **पहाड़ियों पर निर्माण** – दुश्मन को ऊपर चढ़कर हमला करना पड़ता था।
- 💧 **पानी के कुएँ और तालाब** – लंबे समय तक घेराबंदी होने पर भी पानी मिलता रहे।
- 🌾 **अनाज का भंडारण** – कई महीनों तक खाने की व्यवस्था।
- 🏹 **बुर्ज और प्रहरी मीनारें** – सैनिक दूर से दुश्मन को देख सकते थे।

लेकिन यह हर किले में अलग था। छोटे किलों में केवल राजा, सैनिक और दरबारी रहते थे, जबकि बड़े किलों में पूरा बसा हुआ शहर भी हो सकता था।

उदाहरण के लिए:

- [Chittorgarh Fort](#) में बड़ी आबादी रहती थी।
- [Kumbhalgarh Fort](#) में संकट के समय आसपास के लोग शरण लेते थे।
- [Mehrangarh Fort](#) के नीचे पूरा शहर विकसित हुआ था।

इसलिए आपका विचार काफी हद तक सही है—युद्ध या घेराबंदी के समय कई किलों में आम नागरिकों को भी सुरक्षा के लिए अंदर रखा जाता था, खासकर बड़े और महत्वपूर्ण किलों में।

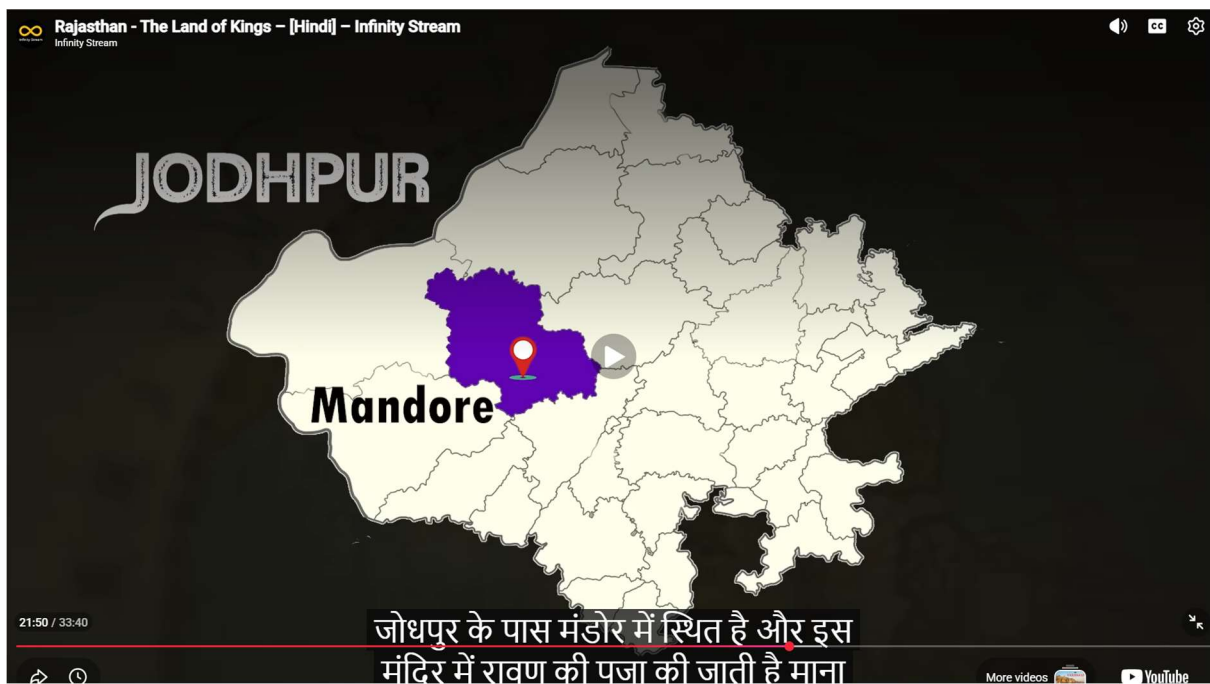
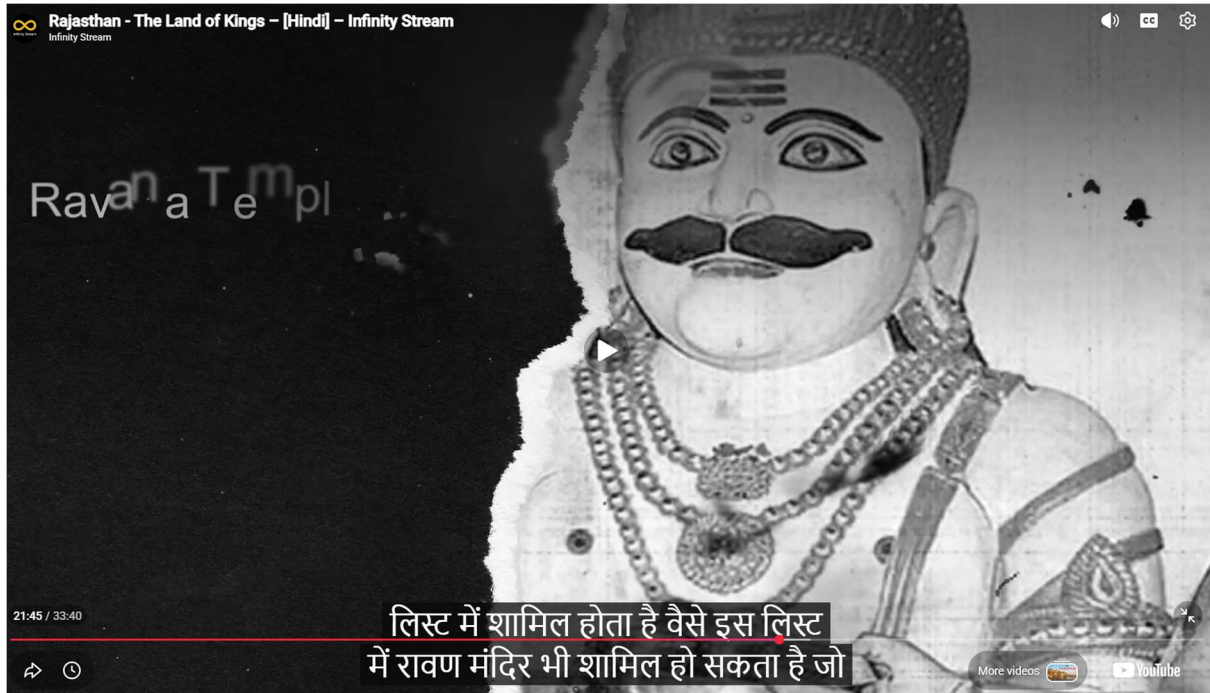














1974 AND 1998

08 / 33:40

जहां भारत ने साल 1974 और 1998 में अपना
पहला सफल परमाणु परीक्षण किया था जोधपुर

More videos

YouTube